P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -6, ISSUE-1, August - 2017
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 एवं एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन

अरविन्द
प्रवक्ता,
डी. आर. यू. विभाग,
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
चड़ीगांव, पौड़ी गढ़वाल

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 एवं एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता की तुलना करना था। इस अध्ययन में यादृच्छिक न्याय विधि का प्रयोग कर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 एवं एम0एड0 के 150–150 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है! इस प्रकार कुल 300 न्यादर्श लिए गये हैं । अध्यापन दक्षता के मापन हेतु बी0के0 पासी एवं एम0एस0 ललिता द्वारा निर्मित अध्यापन दक्षता मापनी का प्रयोग किया गया। प्राप्तांकों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण तकनीक का उपयोग किया गया। अध्ययन परिणाम में दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 एवं एम0एड0 प्रशिक्षणार्थी की अध्यापन दक्षता में सार्थक अन्तर पाया गया।

मुख्य शब्दः दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम, बी0एड0 एवं एम0एड0, प्रशिक्षणार्थियों, अध्यापन दक्षता

प्रस्तावना

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। मानव का सर्वागींण विकास शिक्षा पर ही निर्भर है। शिक्षा त्रिमुखी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक, छात्र एवं पाठ्यक्रम सम्मलित है। शिक्षा की गुणवत्ता बनाये रखने हेतु दक्ष शिक्षकों का होना आवश्यक है। दक्ष शिक्षकों द्वारा ही छात्रों को गुणवत्ता परक शिक्षा प्रदान की जा सकती है। अध्यापन बड़ा ही चुनौतीपूर्ण कार्य है इसके लिए अध्यापक को सकारात्मक रूप से अध्यापन के प्रति समर्पित, दक्ष, नियमित होना ही चाहिए। जो छात्रों को सकारात्मक दिशा प्रदान कर सके। क्योंकि अध्यापक राष्ट्र निर्माण के आधार स्तम्भ है। व्यवहारिक रूप में पाया गया है, कि दक्ष अध्यापक ही छात्रों के लिए उदाहरण बनते है, जिनसे प्रभावित होकर नवयुवक अध्यापन व्यवसाय की ओर आकर्षित हो रहे है। अध्यापन दक्षता से तात्पर्य है अध्यापन कार्य के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में उन कौशलों का प्रयोग जिनके द्वारा कार्य होने की सम्भावना का स्तर अर्थात वे कौशल संकल्पनाये एवं अभिवृत्तियॉ जो अध्यापन कार्य करने वाला व्यक्ति प्रदर्शित करता है। जैसे प्रश्न पूछना–गृह कार्य देना, शाब्दिक–अशाब्दिक पुर्नबलन देना आदि है तथा जो अध्यापन व्यवसाय एवं विशिष्ट कार्य से सम्बन्धित है। दक्षता अध्यापक को अपने कार्य को इस ढंग से करने के लिए प्रेरित करती है, कि वह अपने अध्यापन को प्रभावशाली बना कर छात्रों की कठिनाईयों को न्यून कर सके।

शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने अध्यापक के अध्यापन व्यवहारों के निरीक्षण एवं विश्लेषण के पश्चात पाया कि वे कौशल, संकल्पनायें या अभिवृत्तियाँ जो अध्यापक की इच्छा के विरूद्ध उन पर थोप दी जाती है। उनमें कोई ठोस बल नही होता है और न ही उनसे किन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति होती है। किन्तु यदि कोई व्यवहार अध्यापक के अन्तकरण से उत्पन्न होता है तो वह अध्यापक को स्वभाविक रूप से बल प्रदान करता है। जो अध्यापन प्रक्रिया को दक्षता पूर्ण सम्पन्न करने में सहायक होता है। इस मान्यता को स्वीकार करते अध्यापकों की अध्यापन दक्षता संवर्धन कार्य पर निरन्तर बल दिये जाने की आवश्यकता है।

साहित्यावलोकन

खान (1991) ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रत्यक्ष शिक्षा से बी0एड0 प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता दूरस्थ शिक्षा माध्यम से बी0एड0 प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों से अच्छी थी।

जॉन एवं राठौर (1987) ने अपने अध्ययन (में पाया कि दूरस्थ अध्यापन वाले विश्वविद्यालयों की सामान्य विशषताऐं परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्यापन वाले विश्वविद्यालयों से श्रेष्ठ पायी गयी। देवी (1985) ने अपने अध्ययन में पाया कि दूरस्थ शिक्षा माध्यम से शिक्षा ग्रहण करना संस्थागत शिक्षा माध्यम से श्रेष्ठ है। पासी एवं शर्मा (1982) ने अपने अध्ययन में पाया कि पुरूष एवं महिला अध्यापकों की अध्यापन दक्षता में भाषा के स्वतः अध्ययन और अध्यापन दक्षता के बीच एक उपयुक्त नकारात्मक सह–सम्बन्ध था। प्रसाद एण्ड जोहन (1992) ने अपने अध्ययन में पाया कि दूरस्थ शिक्षा माध्यम के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों का प्रदर्शन प्रायोगिक कार्यो में परम्परागत शिक्षा माध्यम के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों से श्रेष्ठ था। रामचन्द्रन (1991) ने अपने अध्ययन में पाया कि दूरस्थ शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षा संस्थागत कालेज शिक्षक प्रशिक्षणर्थियों की तुलना में अधिक रूचिकर थी। साहू (1993) ने अपने अध्ययन में पाया कि दूरस्थ शिक्षा माध्यम के शिक्षार्थियों का प्रदर्शन संस्थागत शिक्षा माध्यम के शिक्षार्थियों से श्रेष्ठ है।

अध्ययन की समस्या

दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 एवं एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य

1. दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 एवं एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 एवं एम0एड0के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 एवं एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है!
2. परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 एवं एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है!
3. दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है!
4. दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है!

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या का न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग कर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम के विभिन्न महाविद्यालयों एवं दूरस्थ शिक्षा केन्द्र में अध्ययनरत बी0एड0 एवं एम0एड0 के 300 प्रशिक्षणार्थियों का प्रतिदर्श के रूप से चयन किया गया है। जिनमें 150 दूरस्थ शिक्षा माध्यम एवं 150 परम्परागत शिक्षा माध्यम के प्रशिक्षणार्थी थे। दूरस्थ शिक्षा माध्यम के150 प्रशिक्षणार्थियों में 75 बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थी व 75 एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थी थे। इसी प्रकार परम्परागत शिक्षा माध्यम के 150 प्रशिक्षणार्थियों थे। जिनमें 75 बी0एड0 व 75 एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थी थे।

अनुसंधान उपकरण

अध्यापन दक्षता को मापने के लिए बी0के0 पासी एवं एम0एस0 ललिता द्वारा निर्मित अध्यापन दक्षता मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यकीय तकनीकीं

शून्य परिकल्पना के परीक्षण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण मान का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ो का विश्लेषण एवं व्याख्या

सांख्यकीय परिणाम सारणी 1,2,3 एवं 4 के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है।

दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0 एड0 एवं एम0 एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता के आकड़ों का विवरण सारणी संख्या 01 में दिया जा रहा है।

सारणी सं0 – 01

दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0 एड0 एवं एम0 एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता का विवरण

क्र0 सं0	आयाम अध्यापन दक्षता	दूरस्थ शिक्षा माध्यम से बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थी N=75		दूरस्थ शिक्षा माध्यम से एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थी N=75		टी– मूल्य df=148
		M	σ	M	σ	
1-	नियोजन	19.05	2.02	19.64	2.15	1.58
2-	प्रस्तुतीकरण	45.24	5.75	47.49	4.95	2.97**
3-	समापन	9.80	1.18	10.16	1.20	1.83
4-	मूल्यांकन	8.26	2.11	8.65	1.08	1.84
5-	प्रबन्धन	9.30	1.16	9.63	1.18	2.07*

****0.01एवं*0.05 विश्वास के दोनों स्तरों पर सार्थक**

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -6, ISSUE-1, August - 2017
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

सारणी सं0 1: के परिणामों से विदित होता है, कि अध्यापन दक्षता सम्बधी परीक्षण के तीन आयामों – नियोजन , समापन , एंव मूल्याकंन में दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत् बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान कमश (M–19.05,9.80,8.26) की अपेक्षा दूरस्थ शिक्षामाध्यम से अध्ययनरत् एम0 एड0 के प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान कमशः (M--19.64,10.16,8.65) अधिक है । जिससे टी–मूल्य के मान कमश (t–1.58,1.83,1.84) मे सार्थक अन्तर नही पाया गया,किन्तु टी–परीक्षण के पाणिामों के आधार पर कहना अनुचित न होगा कि पाठयोजना से सम्बन्धित नियोजन , समापन एंव मूल्याकंन से सम्बन्धित पाठ के मुख्य बिन्दुओं की प्राप्ति एवं संम्बन्धित उद्वेश्यों को उचित विधि से नियोजित किया गया तथा वैद्य एंव विश्वसनीयता के आधार पर समान पाया गया है । अतः इन आयामों में दोनो ही वर्गो के प्रशिक्षणार्थियों के अध्यापन कौशल में अन्तर नही पाया गया है। लेकिन अन्य दो आयामों – प्रस्तुतीकरण एंव प्रबन्धन में दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0 एड0 के प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान कमश (M–45.24,9.30) दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत एम0 एड0 के प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान कमश (M– 47.49,9.63) में कम है!जिससे टी मूल्य के मान कमश (t– 2.97, 2.07)में .05 एंव .01 दोनो स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया है! दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत् बी0 एंड0 के प्रशिक्षणथियों द्वारा पाठ के प्रस्तुतीकरण के अन्तर्गत आने वाले प्रस्तावना प्रश्नो को पूर्व ज्ञान के अनुसार समस्यात्मक प्रश्न पूछने में प्रासंगिकता पायी गयी इसके अतिरिक्त छात्रों को उचित ढंग से पाठ्यवस्तु से सम्बन्धित उचित परामर्श एंव पाठ में अधिक रूचि लेने को प्रेरित करने मे प्रभावशीलता के कारण यह अन्तर पाया गया है! इसलिए आयाम प्रस्तुतीकरण, प्रबन्धन में 0.05 सार्थकता पर ही सार्थक पाये गये है! जैसा कि एम0 जी0 अग्रवाल (1960) ने अपने अध्ययन में पाया कि दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययन करने वाले 53 प्रतिशत शिक्षक दक्ष नहीं थे।

परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत् बी0एड एवं एम.एड. के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता के आकड़ो का विवरण सारणी संख्या –02 में दिया जा रहा है।

सारणी सं0–02

परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 एवं एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता के ऑकड़ो का विवरण

क्र0 सं0	आयाम अध्यापन दक्षता	परम्परागत शिक्षा माध्यम से बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थी N=75		परम्परागत शिक्षा माध्यम से एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थी N=75		टी–मूल्य df=148
		M	σ	M	σ	
1-	नियोजन	18.48	2.40	19.37	2.06	2.47*
2-	प्रस्तुतीकरण	44.22	6.38	46.46	4.51	2.48*
3-	समापन	9.81	1.07	10.10	1.12	1.62
4-	मूल्यांकन	7.33	1.28	8.34	1.37	4.67**
5-	प्रबन्धन	7.08	1.19	9.73	1.24	3.28**

****0.01 एवं*0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक**

सारणी सं0 02 के अवलोकन से यह पाया गया है कि अध्यापन दक्षता सम्बन्धी परीक्षण के आयाम–'समापन' में परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान (M–9-81) की अपेक्षा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान (M-10.10) अधिक पाया गया है लेकिन टी–मूल्य (t–1.62) के परिणाम के आधार पर 'समापन' से सम्बन्धित छात्रों को पढाये गये पाठ के अंशों को मुख्य बिन्दुओं 'में समाहित कर, गृह कार्य देने के आधार पर समान पाया गया है; अतः आयाम 'समापन' में दोनो वर्गो के प्रशिक्षणार्थियों की पाठ योजना में 'समापन से सम्बन्धित शैक्षिक कुशलताओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है, लेकिन अध्यापन दक्षता के अन्य चार (04) आयामों– नियोजन, प्रस्तुतीकरण, मूल्यांकन, एवं प्रबन्धन में परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान क्रमश (M-18.48,44.22,7.33,7.08) की अपेक्षा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत एम0एड़0 के प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान क्रमशः (M-19.37,46.46, 8.34, 9.73) अधिक है! जिससे टी–मूल्य के मान (t-2.47,2.48,4.67,3.28)में.05 तथा .01 दोनो स्तरों पर सार्थक अन्तर पाया गया है।

सांख्यिकीय ऑकड़ो के आधार पर परिलक्षित होता है कि उपरोक्त चारों आयामों में दोनो वर्गो के प्राशिक्षणार्थियो ने पाठ के नियोजन में भी पाठ के उद्देश्यो की स्पष्टतया के साथ श्रव्य–दृश्य सामग्री का प्रयोग नही किया तथा पाठयोजना के प्रस्तुतीकरण में प्रस्तावना प्रश्नों को उपयुक्त विधि से सम्बन्धित कर समस्यात्क प्रश्न तक पूछने की प्रांसगिकता तथा छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन पाठ के उद्देश्यों के अनुरूप, पद–प्रति –पद किया जिस कारण वे छात्रों के मनोभाव तथा छात्रों के विचारों को स्वीकर करने के साथ प्रबन्धन क्षमता जैसे कि कक्षा में रूचि लेने वाले छात्रों को पुरूस्कृत किया जाना तथा पाठयोजना के पुनरावृत्ति प्रश्नों को भी पूछा जाना आदि क्रियाओं में परम्परागत शिक्षा माध्यम से बी0एड0 तथा एम0एड के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता के आयामों– प्रस्तुतीकरण, मूल्यांकन एवं प्रबन्धन से सम्बन्धित दक्षता की सार्थकता को परिलक्षित करता है जैसा कि रामचन्द्रन (1991) ने अपने अध्यपन के निष्कर्ष मे पाया कि परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षा परम्परागत शिक्षा माध्यम से

अध्ययनरत एम0एड़0 के प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में रूचिकर थी।

दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0 एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता के आकड़ों का विवरण सारणी संख्या 03 में दिया जा रहा है ।

सारणी सं0 – 03

दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0 एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता का विवरण

क्र0 सं0	आयाम अध्यापन दक्षता	दूरस्थ शिक्षा माध्यम से बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थी N=75		परम्परागत शिक्षा माध्यम से बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थी N=75		टी–मूल्य df=148
		M	σ	M	σ	
1-	**नियोजन**	18.78	2.00	20.21	1.95	4.46**
2-	**प्रस्तुतीकरण**	45.56	6.40	50.02	5.82	4.70**
3-	**समापन**	9.88	1.21	10.54	1.21	3.35**
4-	**मूल्यांकन**	8.33	2.25	8.53	1.25	0.68
5-	**प्रबन्धन**	9.50	1.36	9.81	1.09	1.55

****0.01 एवं*0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक**

सारणी सं0 3ः के परिणामों से विदित होता है, कि अध्यापन दक्षता सम्बधी परीक्षण के तीन आयामों – नियोजन ,प्रस्तुतीकरण, समापन में दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियो के मध्यमान क्रमश (M-18.78,45.56,9.88) की अपेक्षा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियो के मध्यमान क्रमश (M-20.21,50.02,10.5)से अधिक है! जिससे टी–मूल्य के मान क्रमश (t-4.46,4.70,3.35) में 0.05 तथा 0.01 दोनो स्तरों पर सार्थक अन्तर पाया गया।

सांख्यिकीय अंकडो के आधार पर कहा जा सकता है कि आयाम नियोजन, प्रस्तुतीकरण, समापन में दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 के प्रशिक्षाणार्थियो की अध्यापन दक्षता में सार्थक अन्तर है! अन्तर का कारण यह है, कि दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियो ने अपनी पारठयोजना के नियोजन में पाठ के स्पष्ट उद्वेश्यों के अनुसार प्रत्मयों के उचित चयन द्वारा पाठ को प्रारम्भ करना तथा पाठयोजना के प्रस्तुतीकरण में छात्रों के विचारो की अभिव्यक्ति को अवसर किया जाना, साथ ही पाठयोजन में प्रस्तावना प्रश्न की क्रमबद्धता को बनाये रखना आदि के अतिरिक्त आयाम 'समापन' में भी दूरस्थ शिक्षा माध्यम के प्रशिक्षणार्थियो ने छात्रों को पाठ के अनुसार उचित गृह कार्य देने के प्रति अधिक रूचि दिखायी! दूसरी और आयाम मूल्याकंन एवं प्रबन्धन में परम्परागत शिक्षा माध्यम के बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियो का मध्यमान (M-8.33,9.50) दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0के प्रशिक्षणार्थियो के मध्यामन क्रमशः (M-8.53,9.81) की अपेक्षाकृत अधिक है लेकिन टी–मूल्यों (t-0.68,1.55) के परिणाम के आधार पर दोनो ही प्रशिक्षणार्थिया की अध्यापन दक्षता में कोई अन्तर नही पाया गया है! क्योंकि दोनो ने पाठयोजना के अनुसार छात्रों की प्रगति को पाठ के उद्वेश्यों के अनुसार मूल्यांकन कर उनकी कक्षागत सम्बन्धी समस्याओं का समाधान किया तथा कक्षा में अध्यापन से सम्बन्धित निर्देश देकर कक्षा अनुशासन बनाये रखने में समान परिश्रम किया। जैसा कि रेनू (1990)ने अपने अध्ययन में पाया कि दोनो वर्गो के प्रशिक्षणार्थियो का प्रदर्शन स्पष्ट रूप से समान पाया है।

दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत् एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्ययन दक्षता के ऑकडों का विवरण सारणी संख्या 04 में दिया जा रहा हैं।

सारणी संख्या–04

दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत् एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता के आंकडों का विवरण

क्र0 सं0	आयाम अध्यापन दक्षता	दूरस्थ शिक्षा माध्यम से एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थी N=75		परम्परागत शिक्षा माध्यम से एम 0एड0 के प्रशिक्षणार्थी N=75		टी–मूल्य df=148
		M	σ	M	σ	
1-	**नियोजन**	18.77	1.90	19.74	1.97	3.06**
2-	**प्रस्तुतीकरण**	44.96	5.81	46.80	5.15	2.05*
3-	**समापन**	10.01	1.17	10.28	1.12	1.45
4-	**मूल्यांकन**	7.92	1.83	8.40	1.30	1.86
5-	**प्रबन्धन**	9.32	1.32	9.65	1.08	1.68

****0.01 एवं*0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक**

सारणी संख्या–04 के अवलोकन से ज्ञात होता है, कि अध्यापन दक्षता सम्बन्धी परीक्षण के दो आयामों– नियोजन एंव प्रस्तुतीकरण में दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत् एम0एड0 के प्रशिक्षणार्धियों के मध्यमान क्रमश (M-18.77,44.96) परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत् एम0 एड0 प्रशिक्षणर्थियों के मध्यमान क्रमश (M-19. 74, 46.80) से कम हैं।जिससे टी मूल्य के मान क्रमश(t-

3.06,2.05) में .05 एंव .01 दोंनो स्तरों पर सार्थक अंतर पाया गया है ।

सांख्यिकीय आकडों के आधार पर कहा जा सकता है, कि दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत् एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों ने अपनी पाठ योजना के नियोजन में पाठ के प्रत्ययों का प्रयोग समुचित विधि से नही किया जिससे छात्रों को पाठ योजना के प्रस्तुतीकरण में पाठ के प्रत्ययों का सही प्रकार से शिक्षण नही कराया गया। अतः दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत् एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों का अध्यापन परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत् एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों से कम पाया गया। दूसरी और अध्यापन दक्षता के तीन आयामों– समापन, मूल्याकंन, प्रबन्धन में दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत् एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान क्रमश (M-10.01,7.92,9.32) परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत् एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान क्रमश (M-10.28,8.40,9.65) से न्यून है लेकिन टी–मूल्य के मान क्रमश (t-1.45,1.86,1.68) में कोई सार्थक अंतर नही है।

सांख्यिाकीय आंकडों से ज्ञात होता है कि अध्यापन दक्षता के उपरोक्त तीन आयामों में दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों में समानता पायी गयी है। इससे यह परिलक्षित होता है, कि इन आयामों में दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत् एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों ने प्रभावी रुप से समान कौशलों का प्रयोग किया है।जैसा कि पासी एण्ड शर्मा (1982) ने अपने अध्ययन में पाया कि अध्यापक की अध्यापन दक्षता से सम्बन्धित अध्यापक के व्यवहार को छात्रों द्वारा पसंन्द किया गया है, एंव छात्रों की पसंन्द एंव अध्यापन में सहसम्बन्ध पाया गया।

निष्कर्ष

ऑकडो के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षो का विवरण निम्न प्रकार है!

1. दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0 एड0 एवं एम0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों की 'अध्यापन दक्षता' के मापन के लिए प्रयोग किये गये सम्बन्धित परीक्षण के 5 आयामों– नियोजन, प्रस्तुतीकरण, समापन, मूल्यांकन एवं प्रबन्धन से सम्बन्धित दक्षता के मूल्यांकन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है, कि दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0 एड0 एवं एम0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों ने दो आयामों–पाठयोजना से सम्बन्धित 'प्रस्तुतीकरण' जिसके अर्न्तगत सीखने से सम्बन्धित छात्रों की सभी क्रियाओं पर प्रशिक्षणार्थियों द्वारा ध्यान दिया जाना आवश्यक है एवं 'प्रबन्धन' जिसमें कि सम्पूर्ण कक्षा पर जनतांत्रिक अनुशासन के माध्यम से कक्षा की व्यवस्था बनाये रखना आवश्यक है! दोनो ही आयामों में, दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0 एड0 एवं एम0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों की दक्षता पर सार्थक प्रभाव पाया गया है, अर्थात् दोनो वर्गो के प्रशिक्षणार्थियों में अन्तर पाया गया है। यह प्रभावशीलता पाठयोजना से सम्बन्धित आयाम 'प्रस्तुतीकरण' पर अधिक एवं आयाम के प्रबन्धन पर अपेक्षाकृत कम पायी गयी है लेकिन अन्य तीन आयामों– नियोजन, समापन एवं मूल्यांकन से सम्बन्धित दोनों प्रकार के प्रशिक्षणार्थियों में अन्तर नहीं है, अर्थात् दोनो वर्गो के प्रशिक्षणार्थियों की पाठयोजना से सम्बन्धित नियोजन, समापन एवं मूल्यांकन की दक्षता समान पायी गयी है।
2. परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0 एड0 एवं एम0 एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की ''अध्यापन दक्षता'' के मापन के लिए प्रयोग किये गये सम्बन्धित परीक्षण के 5 आयामों– ''नियोजन'', ''प्रस्तुतीकरण'', ''समापन'', ''मूल्यांकन'' एवं ''प्रबन्धन'' से सम्बन्धित दक्षता के मूल्यांकन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0 एड0 एवं एम0 एड0 के प्रशिक्षणार्थियों ने 4 आयाम– नियोजन जिसके अन्तर्गत पाठयोजना प्रारम्भ करने से सम्बन्धित प्रशिक्षणार्थियों द्वारा छात्रों की सभी क्रिया–कलापों पर ध्यान दिये जाने, प्रस्तुतीकरण में सीखने से सम्बन्धित छात्रों की सभी क्रियाओं पर नजर रखना, मूल्यांकन के अन्तर्गत छात्रों की शैक्षिक प्रगति को बनाये रखने, एवं प्रबन्धन जिसमें कि सम्पूर्ण कक्षा पर जनतांत्रिक अनुशासन के माध्यम से कक्षा की व्यवस्था बनाये रखना आवश्यक है। चारों ही आयामों में परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0 एड0 एवं एम0 एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की दक्षता पर सार्थक प्रभाव पाया गया है। अर्थात् दोनों वर्गो के प्रशिक्षणार्थियों में अन्तर पाया गया है। यह प्रभावशीलता पाठयोजना से सम्बन्धित आयाम 'मूल्यांकन' पर अधिक एवं आयाम 'नियोजन' पर सबसे कम पायी गयी है, लेकिन आयाम ''समापन'' से सम्बन्धित दोनों वर्गो के प्रशिक्षणार्थियों में अन्तर नहीं है! अर्थात दोनों वर्गो के प्रशिक्षणार्थियों की पाठयोजना से सम्बन्धित दक्षता समान पायी गयी है।
3. दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता के मापन के लिए प्रयोग किये गये सम्बन्धित परीक्षण के 5 आयामों– नियोजन, प्रस्तुतीकरण, समापन, मूल्यांकन एवं प्रबन्धन से सम्बन्धित दक्षता के मूल्यांकन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है, कि दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम के बी0एड़0 प्रशिक्षणार्थियों ने परीक्षण अध्यापन दक्षता के 5 आयामों में से –आयाम 'नियोजन' जिसके अर्न्तगत पाठ को प्रारम्भ करने से सम्बन्धित सभी पक्षों को नियोजित किया जाना, प्रस्तुतीकरण में छात्रों के सीखने के सभी क्रियाकलापों पर ध्यान केन्द्रित करना, एवं 'समापन' में पाठ योजना से सम्बन्धित गृह कार्य पर ध्यान देना आवश्यक है, तीनों ही आयामों में दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत बी0एड़0 के प्रशिक्षणार्थियों में अन्तर पाया गया है! तथा दोनों माध्यमों से अध्ययनरत बी0एड़0के प्रशिक्षणार्थियों की दक्षता पर इन तीनों आयामों का प्रभाव सार्थक रुप में पाया गया है! यह प्रभावशीलता पाठयोजना से सम्बन्धित आयाम 'प्रस्तुतीकरण' पर

सबसे अधिक एवं 'समापन' पर सबसे कम पायी गयी है, लेकिन 'अध्यापन दक्षता' के अन्य दो आयामों– 'मूल्यांकन' एवं 'प्रबन्धन' से सम्बन्धित कक्षागत क्रियाओं में दोनो माध्यमों से अध्ययनरत बी0एड़0 के प्रशिक्षणार्थियों में अन्तर नही है। अर्थात् दोनो माध्यमोंसे अध्ययनरत बी0एड़0 के प्रशिक्षणार्थियों की पाठ योजना से सम्बन्धित दक्षता समान पायी गयी हैं।

4. दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता के मापन के लिए प्रयोग किये गये सम्बन्धित परीक्षण के 5 आयामों– नियोजन, प्रस्तुतीकरण, समापन, मूल्यांकन एवं प्रबन्धन से सम्बन्धित दक्षता के मूल्यांकन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है, कि दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों ने दो आयामों–'नियोजन' जिसके अर्न्तगत पाठयोजना से सम्बन्धित समग्र उद्देश्यों को समाहित किया गया है पर ध्यान दिया गया, पाठयोजना के अर्न्तगत प्रस्तुतीकरण से सम्बन्धित क्रियाओं पर प्रशिक्षणार्थियों द्वारा छात्रों को सीखने के लिए अनुशासित ढंग से प्रेरित किया गया। दोनो ही आयामों में दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों में अन्तर पाया गया है। दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की 'अध्यापन दक्षता' पर इन दोनों आयामों का प्रभाव सार्थक रुप से पाया गया है, यह प्रभावशीलता पाठयोजना से सम्बन्धित आयाम–नियोजन पर अधिक एवं प्रस्तुतीकरण पर अपेक्षाकृत कम पायी गयी है! लेकिन अध्यापन दक्षता के अन्य तीन आयामों– समापन, मूल्यांकन एवं प्रबन्धन से सम्बन्धित दोनों माध्यमों के एम0एड़0 के प्रशिक्षणार्थियों में अन्तर नही पाया गया। अर्थात् दोनो माध्यमों से अध्ययनरत एम0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों की पाठ योजना से सम्बन्धित शिक्षण दक्षतायें समान पायी गयी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *खान,एन0(1991)–इफैक्टिव ऑफ डिस्टेंस एजूकेशन प्रोग्राम विद रिफरैंस टू दी टीचर ट्रैनिंग कॉर्सेस इन कश्मीर यूनिवर्सिटी पी0एच0डी0(एजूकेशन) यूनिवर्सिटी ऑफ कश्मीर पृ०सं०–40*
2. *जॉन एवं राठौर (1897)– द वैल्यू ऑफ द डिस्टैंस टीचिंग यूनिवर्सिटी डिग्री इन द इम्पलायमैंट मार्केट– ऐ स्ट्डी ऑफ द फर्न यूनिवर्सिटी ग्रेज्यूऐट, पृ0सं0 132–140*
3. *देवी, आई0 (1985)– फिलोसोफिकल ऐनालिसिस ऑफ द कन्सैप्ट ऑफ दि डिस्टैन्स एजूकेशन एण्ड इट्स इम्पलीकेशन ऑन इमर्जिंग नॉन–फॉर्मल सिस्टम ऑफ एजूकेशन विद स्पेशल रिफरेन्स टू टीचर एजूकेशन, पी0एच0डी0 (एजूकेशन) ओसमानिया यूनिवर्सिटी, पृ0सं0 109–115*
4. *पासी बी0के0 एण्ड षर्मा एस0के0 (1982)– ऐ स्ट्डी ऑफ टीचिंग कम्पीटैन्सी ऑफ सैकन्डरी स्कूल टीचर'' डिपार्टमैन्ट ऑफ एजूकेशन इन्दौर यूनिवर्सिटी (एन0 सी0 ई0 आर0 टी0)। पृ०सं०–199–204*
5. *प्रसाद, जोहन, ई0ऐ0 (1992) –डेवलपमैंट ऑफ स्किलस टू टीचिंग प्रैक्टिस–ए कम्प्रैटिव स्ट्डी ऑफ एटीट्यूड ऑफ बी0एड़0 ट्रैनिज ऑफ डिस्टैन्स एण्ड कन्वैनसल इन्सटीट्यूट काकतिया जनरल ऑफ डिस्टैन्स एजूकेशन वॉल्यूम (2), पृ0सं0 80–91*
6. *रामाचन्द्रन जी0 (1991) –ऐन इन्कवायरी इन टू दी एटीट्यूड ऑफ स्ट्यूडैन्ट टीचर टूवर्डस टीचिंग'' एम0 फिल0 (एजूकेशन) मदुरै कामराज यूनिवर्सिटी। पृ०सं०–93–103*
7. *साहू पी0के0 (1985) –ऐ स्टडी ऑफ कारेस्पोन्डेन्स एजूकेशन इन एन इण्डियन यूनिवर्सिटी बरोदा। पृ०सं०–71–82*
8. *सिंह, वाई0के0 (2000) –न्यू डाइमैनसन ऑफ टीचिंग प्रैक्टिकल मण्डल, अनमोल पब्लिकेशन, न्यू देहली, पृ0सं0–11–29*
9. *रामा, एम0 (1980) –फैक्टोरियल स्ट्रक्चर ऑफ कम्पिटैन्सी एमॉन्ग सैकन्डरी स्कूल टीचर, इण्डियन एजूकेशनल रिव्यू वाल्यूम 15, नं03, एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, पृ0सं0 81–84*
10. *वर्मा, एम0 (1965) –एन इन्ट्रोडक्शन ऑफ एज्यूकेशनल एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्च, एशिया पब्लिशिंग हाऊस, न्यू देहली, पृ0सं0 –208*